घोटाले होते रहेंगे क़यामत तक

मनोज कुमार झा

विवादास्पद विधेयक का विरोध कर राहुल बाबा ने अपनी 'हीरो' वाली छवि बनाने की कोशिश की है। राहूल क्या भूल गए कि इस विधेयक को उनकी मां कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की सहमति प्राप्त थी। कैबिनेट ने इसे पारित किया था। लगभग सभी पार्टियों की इस बिल पर सहमति थी, क्योंकि आज कौन-सी पार्टी ऐसी है, जिसमें भ्रष्टाचारी, घोटालेबाज और अपराधी-बलात्कारी मौजूद न हों। विधेयक पर सिर्फ महामहिम राष्ट्रपति का हस्ताक्षर होना था, फ़िर यह कानून बन जाता-काला क़ानून, जैसे न जाने कितने क़ानून बने हुए हैं।

पार्टी और सत्तातंत्र से अपने-आपको ऊपर समझनेवाले राहुल के इस 'क्रांतिकारी' क़दम का फ़ौरी परिणाम ये हुआ कि उनकी ही पार्टी के राज्यसभा सांसद रशीद मसूद और कांग्रेस के अन्यत्र सहयोगी चारा घोटाला किंग जेल में चले गए। संसद सदस्यता भी जायेगी और अगले कई वर्षों तक चुनाव भी नहीं लड़ पाएंगे। पर सवाल यह है कि क्या इससे देश की राजनीतिक व्यवस्था पाक-साफ़ हो जायेगी? क्या घोटालेबाज, भ्रष्टाचारी और ख़ुनी-क़ातिल देश के नीति निर्माता नहीं बन पाएंगे? ऐसा हो पाना नामुमकिन है।

भूलना नहीं होगा कि अभी केन्द्र सरकार में अनेकों घोटालेबाज मंत्री हैं। स्वयं प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के चेहरे पर कोयला घोटाले की कालिख पुती हुई है। चारा घोटाला तो महज़ 950 करोड़ रुपये का था। यूपीए सरकार के राज में जो घोटाले हुए, लाख-लाख करोड़ रुपये से कम के नहीं रहे। यूपीए सरकार ने घोटालों में वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है। जितने घोटाले इस राज में हुए, कभी नहीं हुए। सभी घोटालों का नाम गिनना व्यर्थ लगता है। फ़िर भी, कुछ घोटाले-कॉमनवेल्थ खेल घोटाला, टेलीकॉम स्पेक्ट्रम घोटाला, मुंबई का आदर्श सोसाइटी घोटाला और सबसे बढ़कर कोयला घोटाला, घोटालों के इतिहास में मील के पत्थर माने जाएंगे। इन घोटालों में किस-किस को सज़ा होगी और कब तक होगी, ये युवराज राहुल बता सकते हैं?

लकवाग्रस्त न्याय व्यवस्था में चारा घोटाले के अभियुक्तों को 17 साल के बाद सज़ा मिली। अभी हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट जाने का विकल्प खुला हुआ है। अभी जेल में भी घोटाला-अभियुक्तों का वीआईपी ट्रीटमेंट हो रहा है। राबड़ी राजद की प्रधान बन गई हैं और भदेस अंदाज में कह रही हैं कि लालू जेल से ही पार्टी चलायेंगे यानी राजनीति करेंगे। राजनीति क्या करेंगे, गुंडागीरी और माफ़ियागीरी करेंगे जो वे पहले से ही करते चले आ रहे हैं। लालू के बेटे तेजस्वी को पटना लौटने पर मीडिया ने उसे ऐसे कवर किया, मानो वो कोई हीरो हो। मीडिया ऐसे टुच्चों का भाव बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभा रहा है, क्योंकि कॉरपोरेट नियंत्रित मीडिया का स्वार्थ भी इन घोटालेबाजों के साथ ही जुड़ा हुआ है।

बहरहाल, जनता को राहुल के द्वारा की गई इस नाटकबाजी से भ्रम में रहने की जरूरत नहीं है। 17 साल में चारा घोटाले का फ़ैसला हुआ और लालू को सज़ा मिली। महज पांच साल की। जमानत पर छूटना भी संभव है। लेकिन जो माल घोटालेबाजों ने गड़प लिया, उसका क्या हुआ? वह तो जनता का धन था। उसका कोई हिसाब-किताब नहीं। इसके अलावा, लाखों-लाख करोड़ के जो इतने घोटाले सोनिया-मनमोहन राज में हुए, उसकी जांच होते-होते, उस पर कोर्ट का फ़ैसला आते-आते कहीं क़यामत का दिन न आ जाए।

तब तक इस देश पर घोटालेबाज़ों, लुटेरों और माफ़िया तत्वों को शासन करने

मनमोहन सिंह : हम संरक्षण देते रहेंगे कयामत तक

की पूरी छूट रहेगी। और जरा यह सोचें, अगर सारे घोटालेबाज, भ्रष्ट, जनता का धन लूटकर विदेशों में जमा करने वाले नेता अंदर कर दिए जाएं तो संसद और राज्यों की विधानसभाओं में गिने-चुने ही लोग दिखेंगे। फ़िर विधान कौन बनाएग, शासन कौन चलायेगा? कितना बड़ा संकट पैदा हो जाएगा। सारे भ्रष्ट घोटालेबाज आला-अफ़सर, रिश्वतखोर न्यायकर्ता जेलों में ठूंस दिए जाएं तो यह समाज-व्यवहार ढह नहीं जाएगी। आज कुछ भाट और चारण किस्म के पत्रकार एवं बुद्धिजीवी राहुल को क्रांतिकारी बता रहे हैं। क्या वे इतने मूढ़मति हैं कि उन्हें यह पता नहीं कि भ्रष्टाचार या घोटाला कोर्ट में साबित होने पर ही नेता या आफ़सर को सज़ा मिल सकती है और क्या उन्हें यह पता नहीं कि जांच प्रक्रिया व न्याय प्रक्रिया कितनी लचर, सुस्त और स्वयं भ्रष्ट है।

फ़िर चोर-डाकू को पकड़ लिया जाय, सज़ा दे दी जाय और लूट का माल बरामद न किया जाये तो पकड़ने और सज़ा देने का फ़ायदा? क्या जनता इस बात को समझने के लिये तैयार है? अगर लालू, जगन्नाथ मिश्र और अन्य दोषियों से घोटाले की रकम वसूली जाती, मजा तो तब आता। इनके पास इतनी संपदा है भी कि काफ़ी कुछ वसूल किया जा सकता था। इनकी संपत्ति कुर्क की जा सकती थी। इनके बैंक खाते सील किए जा सकते थे। ऐसा किए जाने पर इनकी कमर ऐसी टूटती कि ये आगे राजनीति करने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे, इस काबिल ही नहीं रह जाते। आज घोटालों के धन के बूते ही लालू जेल से पार्टी चलाएंगे और उनके पुत्र तेजस्वी धमाल मचाएंगे, राबड़ी भी इतराती रहेंगे।

पर क्या इस भ्रष्ट व्यवस्था में ऐसा संभव है। वर्तमान वयवस्था का आधार ही है भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार।

इसलिए राहुल की यह नौटंकी व्यर्थ ही क़वायद है। इससे यूपीए सरकार की किरकिरी ही हुई है। जनता को ज़्यादा समय तक नौटंकी दिखा-दिखा कर बहलाया नहीं जा सकता। राहुल की नौटंकियों में अब ज़्यादा भड़वागीरी ही हो रही है, पर वे समझ रहे हैं कि 'हीरो' बन जाएंगे। राहुल इतने ही दिल के पाक-साफ़ और ईमानदार हैं तो अपने बहनोई राबर्ट वाड्रा के बारे में कुछ क्यों नहीं कहते जिसने हरियाणा में करोड़ों-करोड़ की ज़मीन हड़प ली है। ये भी तो एक घोटाला ही है, जो लगातार मीडिया की सुर्खियों में बना रहा है।

दरअसल, ये व्यवस्था ही भ्रष्टाचार और घोटाले की नींव पर खड़ी है। इस देश के खेतों-खलिहानों में, कल-कारखानों में, खदानों में और न जाने कितने कालाबाज़ारों में 'मेहनत की लूट' सबसे बड़ा घोटाला है। यह एक ऐसा घोटाला है, जिस पर घोटालेबाज सरकार के क़ानूनों ने वैधता की मुहर लगा दी है। सरकार उन घोटालेबाजों-काले कारोबारियों की अहर्निश सेवा में है और रहेगी जिनका खेतों, कारखानों, खदानों, नदियों, पहाड़ों और अन्य प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों पर कब्ज़ा है। 'मेहनत के लुटेरे' महासागरों और आसमान पर भी कब्ज़ा करने के लिये जंग लड़ने को तैयार हैं। पूरी दुनिया ही घोटालों की अर्थव्यवस्था पर चल रही है।

फ़िर राहुल व्यर्थ में भड़ैती क्यों कर रहे हैं? जिस तरह सूअरों को विष्ठा प्रिय है, राजनेताओं और राज्य-अधिकारियों को घोटाले प्रिय हैं।

घोटाले होते रहेंगे क़यामत तक।

धर्म के नाम पर लूट कब तक

इस देश में हर छोटा–बड़ा मंदिर लूट का अड्डा है

मनोज कुमार झा

कहावत झूठ नहीं पाप का घड़ा फूटता ही है। ढोंगी संत, धर्म-व्यापारी आसाराम के पापों का घड़ा फुट चुका है। हज़ारों करोड़ की धन-दौलत, देश-विदेशों में भव्य आश्रमों के मालिक आसाराम को जमानत तक नहीं मिल पा रही है, जबकि राजनीतिक दलों के प्रभावशाली नेता, अदालत में खड़े होने के लिए लाखों रुपये लेने वाले वकील, बड़े-बड़े संत-महंत शंकराचार्य, आर्ट ऑफ लिविंग सिखाने वाली दुकानों के विशाल विश्वव्यापी चेन के मालिक और पूंजीपति आदि उसे बचाने के लिये पूरा जोर लगा रहे हैं। सबसे बढ़कर तो उसके भक्त और विशेष रूप से भक्तिनें उसे जेल से छुड़वाने और उसके चरणों में लोटने के लिये तैयार हैं। आंदोलन, धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। सच कहा है-

'भज गोविंदम् भज गोविंदम् गोविंदम् भज मूढमते'।

आसाराम भक्तों से दमड़ी वसूलने के साथ ही भक्तिनों की चमड़ी भी नहीं छोड़ता था। न जाने कितनों की चमड़ी उतार ली। नंगा कर दिया। आबरु ले ली।

आसाराम के व्यभिचार की कहानिया एक के बाद एक सामने आती जा रही हैं। कहते हैं कि उसके लिए लड़कियां खुद उसका लड़का नारायण साईं लेकर जाता था। न जाने एय्याशी के कितने अड्डे बना रखे थे इसने। विदेशी भक्तिनों के साथ अलग रासलीला होती थी तो आश्रमों में रहने वाली अल्पवयस्क बालिकाओं को बुरी तरह जाल में फंसा यह राक्षस पूरी तरह उनको लील ही जाता था। फ़िर भी, मूढ़मति इसके भक्तों को देखिए, अभी भी इसके जयकारे लगाये जा रहे हैं । यह धर्म है। धर्म के नाम पर, अंध-आस्था के नाम पर सब जायज है । इस धर्म के नाम पर अंध आस्था के नाम पर न जाने कितना अनाचार हो रहा है। और, जो अंध-आस्था के ख़िलाफ़ जन चेतना जागृत करने का अभियान चलाता है, उसे गोलियों से भून दिया जाता है। महाराष्ट्र में दाभोलकर का उदाहरण सामने है। यह जनतंत्र है। यहां सच कहने पर गोली मार दी जाती है।

अंध-आस्था, धर्म के नाम पर लूट, जाल-फ़रेब के ख़िलाफ़ सैंकड़ों साल पहले महान् भक्त कवि कबीरदास ने भी अभियान चलाया था। धर्म के धंधेबाज़ों ने उनपर भी हमला किया था। कबीर ने लिखा हैं-

'साधो देखो जग बौराना,
सांच कहो तो मारन धावे, झूठे जग पतियाना।'

सैंकड़ों सालों में विकास क्या होता, जनता में तर्कबुद्धिवादी चेतना क्या पनपती, हालत बद से बदतर होती जा रही है। गली-गली में धर्म की दुकानें खुल गई हैं। अंध-आस्था के नाम पर धर्म के धंधेबाज दोनों हाथों से लोगों को लूट रहे हैं। इस देश में हर छोटा-बड़ा मंदिर लूट का एक अड्डा है।

सदियों से रहा है। लूट और यौन शोषण का ऐसा अड्डा जो ईश्वर के आशीर्वाद से चलता है। मंदिरों में देवदासी प्रथा का अस्तित्व हाल-फ़िलहाल तक बना रहा। धार्मिक वैधता प्राप्त इस वेश्यावृत्ति को रोक पाने में क़ानून के पसीने भी छूट गए। आदिकाल से ही धर्म अज्ञान, लूट, स्त्रियों के यौन शोषण, अन्याय और असमानता को बढ़ावा देता रहा है। लूटेरे शासकों का ये बहुत बड़ा हथियार रहा है और आज भी है।

हमारे देश के बड़े-बड़े राजनेता, प्रशासक, उद्योगपति, यहां तक कि कतिपय वैज्ञानिक भी पाखंडी और मक्कार धर्माधीशों-बाबाओं के आगे शीश झुकाते हैं। फ़िर 'मूढ़मति' जनता की बात क्या करें!

इंदिरा गांधी से लेकर नरसिंहाराव तक ने पाखंडी बाबाओं, योगियों और तांत्रिकों को अपने दरबारों में पाला, जो बंदूक की फैक्ट्री चलाने से लेकर हथियारों की दलाली तक किया करते है। 'रासपुटिनों' के बिना राजसत्ता का काम नहीं चलता। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल तो आत्माओं से बात किया करती थीं। सोने की ईंटों के अंबार लगे नोटों से भरे कमरे में सोने वाले जाल-साज और फ़रेबी सत्यश्री साईं बाबा के कदमों में किस हस्ती ने सिर नहीं झुकाए। टाटा से लेकर मनमोहन सिंह और पूर्व राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम तक कतार में शामिल रहे। धर्म के नाम पर बड़ों-बड़ों को बेवकूफ़ बनाने वाले इस जाल-साज पर भी स्त्रियों और बच्चों के यौन शोषण के आरोप लगे, पर जब राष्ट्रपति ही जिसके कदमों में सिर झुकाता हो, उसका कोई क्या बिगाड़ लेगा।

धर्म के नाम पर लूट का साम्राज्य चलाने वाला आसाराम अकेला नहीं। न जाने कितने हैं। देश के हर तीर्थस्थल पर हज़ारों की संख्या में पंडे-पुजारी धर्मभीरू जनता को लूटने में दिन-रात लगे हैं। मौका मिलते ही औरतों की आबरू से खेलना और लड़कियां भगाना इनका शगल है। गांजा-भांग-अफ़ीम और दौलत के नशे में मदमस्त ये परजीवी इस देश पर बोझ के समान हैं, पर इनका कोई बाल-बांका तक नहीं कर सकता। इन्हें ख़ुद भगवान ने ही लूटने का लाइसेंस दे रखा है। ऊपर के भगवान को तो किसी ने न देखा, इस धरती के भगवानों ने ही इन्हें सारी छूट दे रखी है।

एक तरफ़ जहां लाखों-लाख लोग गर्मी, बरसात और हाड़तोड़ सर्दी में खुले आसमान के नीचे रातें बिताने को मजबूर हैं, वहीं आसाराम जैसे दुराचारी को सरकार ने देश के बड़े-बड़े शहरों में मुफ़्त की ज़मीन दे रखी है, जहां उन्होंने भव्य पांच सितारा आश्रम बनवा रखे हैं-एय्याशी के अड्डे। सरकार से शह पाकर इन अघोरियों ने ज़मीनें भी कब्जा रखी हैं और गुंडों के साथ एक से बढ़कर एक कूटनियां भी पाल रखी हैं जो इनके इशारे पर लड़कियां फंसा-फंसा कर लाए।

धर्म के इन धंधेबाजों के पापों का वर्णन करना आसान नहीं। सच तो ये है कि धर्म के नाम पर पूरी दुनिया में पाप कर्म ही होते रहे हैं। मध्ययुगीन यूरोप में चर्च ने आम जनता पर जो जुल्म ढाये और पापकर्म को जिस क़दर बढ़ावा दिया, उसे देख 18 वीं सदी में महान् फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्तेयर ने घोषणा की थी-'भ्रष्ट गिरजे को नष्ट कर दो।' वाल्तेयर को बास्तीय के किले में कैद कर दिया गया।

हमारे देश में प्राचीन काल में ही ईश्वर और धर्म के नाम पर जनता के साथ होने वाले अन्याय का विरोध चार्वाकों ने किया था। मठाधीशों और शासकों ने मिलकर उन्हें जिंदा जलाया।

सत्ता अन्याय के विरुद्ध उठने वाली हर आवाज़ को कुचल देती है। यही इतिहास है, पर अन्याय के विरुद्ध आवाज़ तो उठती रही और उठती रहेगी। इसका भी इतिहास है तो भविष्य भी होगा।

देर-सबेर, यह जनता को तय करना होगा कि लूट-लूट कर अकूत दौलत का साम्राज्य खड़ा करने वाले आसाराम जैसे व्यभिचारियों का अंजाम क्या हो।